# गुग्गुल के संरक्षण, संबर्धन एवं विनाशहीन विदोहन के लिए सुजाग्रति द्वारा आन्दोलन–

आज भारत में गुग्गुल की मॉग 1610 टन है अब पूरे भारत में 10 टन गुग्गुल उत्पादन हो रहा है। पहले 1961 में 500 टन गुग्गुल भारत में होता था। किन्तु अब 10 टन, इसलिए आज 90 प्रतिषत गुग्गुल मॉग की पूर्ति पाकिस्तान से होती है। हमारा बहुत सा पैसा इस मॉग की पूर्ति में पाकिस्तान जा रहा है तथा बड़ती व्यवसायिक मांग की पूर्ति के लिए पौधे से अधिक गोंद की प्राप्ति हेतु पौधे से अवैज्ञानिक तरीके से दोहन हो रहा है। फलस्वरूप पौधे का घनत्व तीव्र गती से घटता जा रहा है। इसलिए यह लुप्त प्रजाती की श्रेणी में है। ऐसे ही चलता रहा तो यह प्रजाती खत्म हो जायेगी।

गुग्गुल के पौधे शुष्क एवं अर्धषुष्क जलवायु क्षेत्र में पाये जाने के कारण इस पौधे का व्यापक वृक्षारोपण किया जाना चाहिए।

भारत में कॉमीफेरा वाइटी प्रजाती का व्यवसायक महत्व है जो कि चम्बल अंचल में पाई जाती है। इस प्रजाती में गुग्गुल लिपिड मुख्यतः ई. एवं जैड. गुग्गुलस्ट्रोर्न का मिश्रण सर्वाधिक है। यही मुख्य है इसलिए इस की कीमत अधिक है। यह अनुंसधान डावर कम्पनी दिल्ली तथा भारती औषधी अनुसंधान लखनऊ में हो चुका है।

## चम्बल अंचल में गुग्गुल की स्थिती–

यहां श्रेष्ठ प्रजाती के पौधे हैं इनके संरक्षण एवं संबर्धन की आवश्यकता है इस हेतु सुजाग्रति संस्था कार्यरत है किन्तु वड़े पैमाने पर कार्य करने की आवश्यकता है। अधिक संसाधनों की कमीं के कारण वड़े पैमाने पर काम नही हो पा रहा है कुछ चिनौतियॉ हैं–

**1** जैसे गुग्गुल चम्बल में हल्की मिट्टी में लगा है कभी–कभी अधिक वर्षा होती है तो 2–3 दिन गुग्गुल पेड़ वीहड़ में टेक (ढाय) में लगे हैं वर्षात में मिट्टी गीली होती है तो पेड़ गिर जाता है। हल्की मिट्टी में दीमक की संख्या अधिक होने के कारण यहा पर विघमान गुग्गुल के वृक्षों को दीमक खा जाती है और वर्षा के कारण गिरे हुए पौधे को ज्यादातर दीमक खत्म कर देती है।

**2 अतिक्रमण–** वड़ता भूमि कटाव तथा घटती उपजाऊ भूमि के कारण लोग खेती हेतु वीहड़ों पर अतिक्रमण करने के कारण भी गुग्गुल पौधे नष्ट हो रहे हैं।

3 वीहड़ में लगे गुग्गुल पौधे से अत्यधिक राल (गोंद) पाने हेतु पहले आओ पहले पाओ के चक्कर में लोग कैमीकल से अवैज्ञानिक तरीके से चीरा लगाते हैं इस से गोंद तो अधिक निकलता है पर पेड़ मर जाता है।

4 वीहड़ में पौधे पर चीरा कोई लगाता है तथा गोंद कोई और तोड़ ले जाता है क्योकि वीहड़ पर किसी की मिल्कियत नही है इस बजय से लोग रूची नही लेते हैं। यहां झपटा छीनी भी होती है गरीब लोगों से गोंद छीन लेते हैं।

5 प्राकृतिक राल एवं गोंद संग्रहण, प्रसंकरण एवं मूल्य संबर्धन हेतु चम्बल अंचल में वैज्ञानिक विधी से गोंद निकालने हेतु प्रषिक्षणों की व्यवस्था हितग्राही किसानों के लिए नही है एक छोटे से हिस्से में सुजाग्रति संस्था द्वारा ही प्रशिक्षण दिये जाते हैं।

**सुझाव–** सुजाग्रति संस्था द्वारा यह सुझाव 10 वर्ष के गुग्गुल कार्य को देखते हुए अपने अनुभव से गुग्गुल का संरक्षण एवं संवर्धन अत्यधिक मांग की पूर्ति हेतु यह है कि गुग्गुल को रेवन्यू क्षेत्र में लगाया जाऐ जिससे इस का संरक्षण एवं संबर्धन होगा तथा गोंद का संग्रहण, प्रसंस्करण एवं मूल्य वर्धन होगा व विनाशहीन विदोहन होगा। वीहड़ में भी लोगों की पट्टे की जमीन है उस में किया जा सकता है। तथा खेती की जमीन में भी गुग्गुल किया जा सकता है।

चूंकि गुग्गुल वीहड़ क्षेत्र में ढालू 120 डिग्री के ऐन्गालों में लगा हुआ है। इस कारण से गुग्गुल का बीज संग्रह करना बड़ा ही कठिन है क्योकि पकने के बाद यह बीज गिरता है तथा लुड़क कर निचे चला जाता है निचे से बीज बीना नही जा सकता क्योंकि उसका पता लगाना असम्भव है। और बीज बरसात के पानी में बहकर नदी में चला जाता है। इसी कारण से बड़े पैमाने पर बीज इकट्ठा करना कठिन है। इसलिए गुग्गुल को समतल रेवन्यू क्षेत्र में लगाने से गुग्गुल का बीज असानी से प्राप्त होगा तथा गोंद भी असानी से प्राप्त होगा अभी गोंद निकालने वाले लोग वीहड़ में गिर जाते हैं तथा उनका गोंद मिट्टी में मिल जाता है तथा मिट्टी में मिलकर खराव हो जाता है। तथा लावारिस पेड़ों से लोग एक से दो किलो गोंद इकट्ठा करते हैं तथा पंसारियों को कौड़ीयों के भाव में बेच देते हैं। रेवन्यू क्षेत्र में गुग्गुल लगाने से इकट्ठा शुद्व गोंद प्राप्त होगा जो आंकड़ों में दिखेगा।

वन विभाग से मेरा विन्रमता पूर्वक अनुरोध है कि गुजराती गुग्गुल यहा न लगाऐं आप देख रहे हैं आपके द्वारा दो वर्ष पहले लगाये गुग्गुल के पौधे में बड़त नही हो पा रही है तथा आधी से अधिक पौधे खत्म हो गये हैं इस से यह गोंद नही निकलेगा प्रजाति खराव होगी लोगों का विश्वास खत्म होगा।

अध्यक्ष
सुजाग्रति समाज सेवी
संस्था मुरैना म0 प्र0